प्रचार के लिए निकल पड़े सर्वप्रथम उन्होंने अपना पहला उपदेश उन बिछड़े हुए साथियों को दिया जिन्होंने उन्हें पाखंडि समझकर उनका साथ छोड़ दिया था। उच्च निच्च स्त्री पुरुष सब के लिए संघ के दरवाजे खुले हुए है।

उनका कहना था कि दुख मोह माया, तृष्णा, लालसा इत्यादि के कारण उत्पन्न होते हैं। वस्तुतः इन दुखों पर विजय प्राप्त की जा सकती है। इसके लिए मनुष्य को अष्टांगिक मार्ग अपनाना चाहिए ये। अष्टांगिक मार्ग है कि मनुष्य को सत्य असत्य पहचानने की शक्ति इच्छा और हिंसा, रहित संकल्प सत्य एवं मृत्यु, वाणी, सत्यक्रम दान, दया, सदाचार जीवनयापन का सदाचार पूर्ण एवं उचित मार्ग विवेक पूर्ण, प्रयतन अपने कर्मों के प्रति सज्ग रहना तथा चित कार्यों एकाग्रता से आठ मार्गों का पालन करना चाहिए। मनुष्य को ना तो अधिक सुविधा मे लुप्त रहना चाहिए और नाही अनावश्यक ढंग से शरीर को कष्ट पहुंचाना चाहिए ना ही अनाइसी अष्टांगिक मार्ग का पालन करते हुए मनुष्य अन्तः मानव जीवन के कष्टों से मुक्ति पाकर निर्वाण की प्राप्ति कर सकेगा।

महात्मा बुद्ध द्वारा दरसाया गया मार्ग अत्यंत ही सरल था। इसके लिए ना तो पुरोहितों की आवश्यकता थी और ना ही यज्ञ करने और ना ही बली देने की वादों का मार्ग ज्ञान भी इस मार्ग पर चलने के लिए जरूरी नहीं था। बुद्ध के अनुसार दस सिलों का पालन करना आवश्यक

Scanned By Scanner Go

था ये इस सिल पे अंहिसा इस सिले थे। सत्य, अस्तैय, अपिरग्रह विचार से बचना, नसिलों प्रदार्थों का सेवन करना समय का भजिन नहीं करता, सुख पद विस्तर का त्याग करना, नाच, गान से बचना और ब्रह्मचार्य का पालन करना, बनारस मगध पधारे जो अनेक धर्म पचारकों की क्रम भुमी थी। बुद्ध ने मानव जीवन को नया संदेश दिया। महान शासक अशोक उसके धर्म से काफी प्रभावित हुए। उन्होने अपने पुत्र और पुत्री संघमृगा को संघ वाधी वृक्षा को लेकर प्रचार प्रसार के लिए विदेश भी भेजा। अपने जीवन के अंतिम काल में वे धर्म को प्रचार करते हुए कुसी नगर कसिटा। जिला देवडिया और उत्तर प्रदेश पहुंचे वहाँ चुन्द नामक सोनार के पास भोजन करने के पश्चात उदर विकार होने से 80 बर्ष की आयु में वहाँ उनकी मृत्यु हो गई। अपने जीवन काल में ही बुद्ध ने बौद्धधर्म मे संस्थायुक्त प्रदान कर दिया था। उच नीच स्त्री, पुरुष सब के लिए संघ के दरवाजे खुले हुए थे।

इस प्रकार निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं। कि बौद्ध धर्म की सफलता के शिखर पर पहुचाने मे बुद्ध के प्रभाव शाली व्यक्तत्व का भी योगदान था राज परिवार में उत्पन्न होने के बावजुद संसारिक सुखों को त्याग कर सन्यासी का कठिन दिन अपना कर बुद्ध ने हमलोगों के सामने एक उज्जवल आदर्श रखा। वे स्वंग लोगों से मिलते उनके दुख दर्द को समझते थे। उनका

Scanned By Scanner Go

जीवन शुद्ध और सरल था। अपने प्रेम पूर्ण व्यवहार के कारण ही उन्होंने अंगुलिमाल जैसे क्रूरखुर डाकू का और आम्रपाली जैसी गणिका भी बौद्ध धर्म की अनुयात्री बन गई उनकी प्रचार सैली भी ऐसी थी। जिनका जनमानस पड गहरा प्रभाव पडा वे अज्ञानियों को समझाने के लिए हास्य एवं व्यंग का भी सहारा लेते थे। लेकिन दुख की बात तो यह है कि जिस बौद्ध धर्म का जन्म स्थान भारत बनी रहा वहाँ अनेक अनुयात्री अब नाम मात्र ही रहे है। लेकिन विदेशी अनुयात्री अभी भी बडी है। सद्धा एवं विश्वास के साथ वहाँ नतमस्तक होते है। जो कुछ भी हो इतना स्वर्दा सत्य है कि महात्मा बुद्ध और उसके द्वारा स्थापित बौद्ध धर्म का प्राचीन भारत के इतिहास मे महत्वपूर्ण स्थान है।

———— x ————

Scanned By Scanner Go